Self Respect

22-07-2014

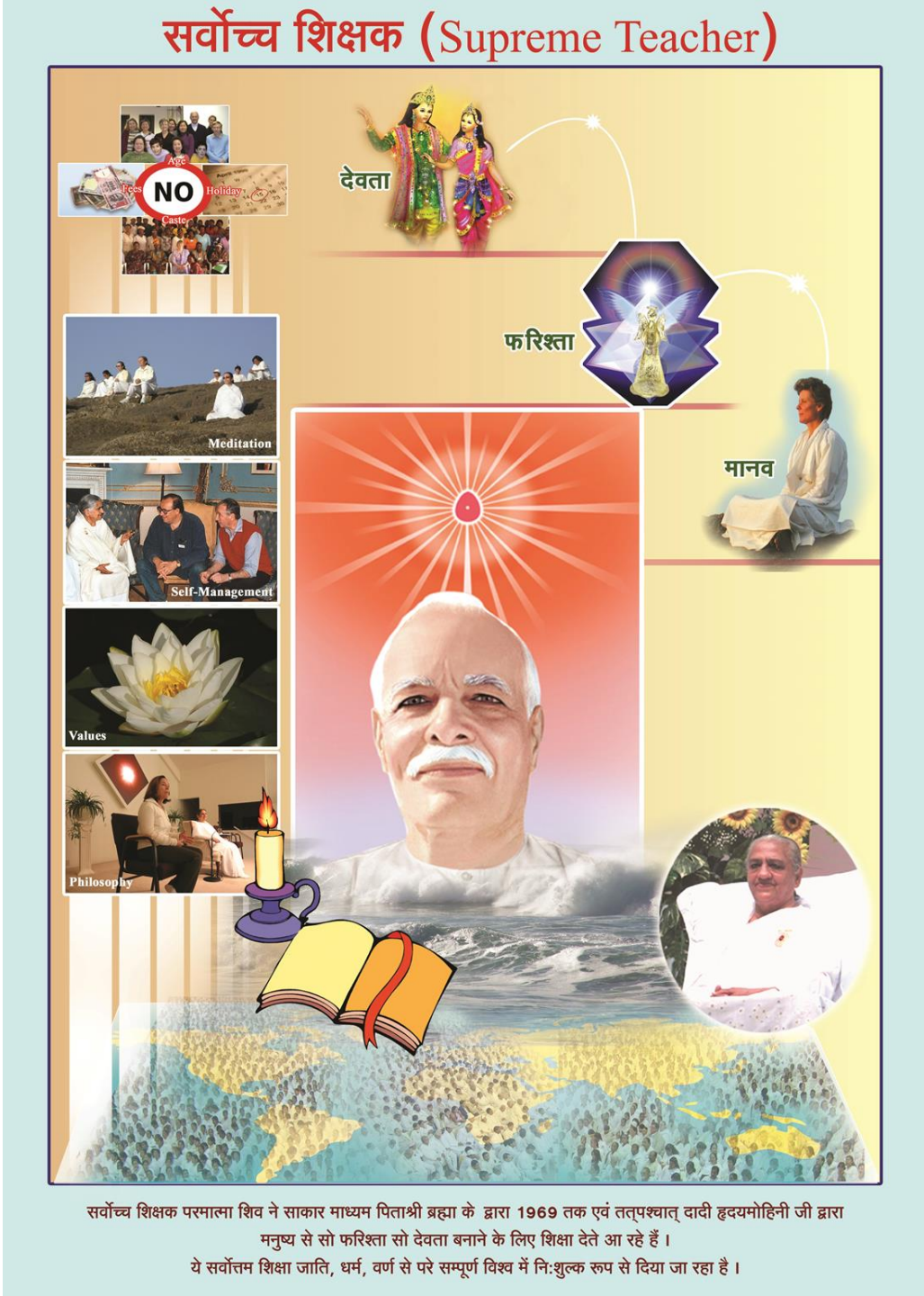

- ✓आत्म- अभिमानी हो बैठना है । बाप बच्चों को समझाते हैं कि अपने को आत्मा समझो । अब बाबा आलराउण्डर से पूछते हैं सतयुग में आत्म- अभिमानी होते हैं या देह- अभिमानी? वहाँ तो ऑटोमेंटिकली आत्म- अभिमानी रहते हैं, घड़ी-घड़ी याद करने की दरकार नहीं रहती ।

- ✓ बाबा ने बहुत अच्छी रीति समझाया है-इस समय यह कलियुगी पतित दुनिया है जिसमें महान् अपरमअपार दु :ख हैं । अब हम मनुष्यों को सतयुगी पावन महान् सुखधाम में ले जाने की सर्विस कर रहे हैं वा रास्ता बताते हैं ।

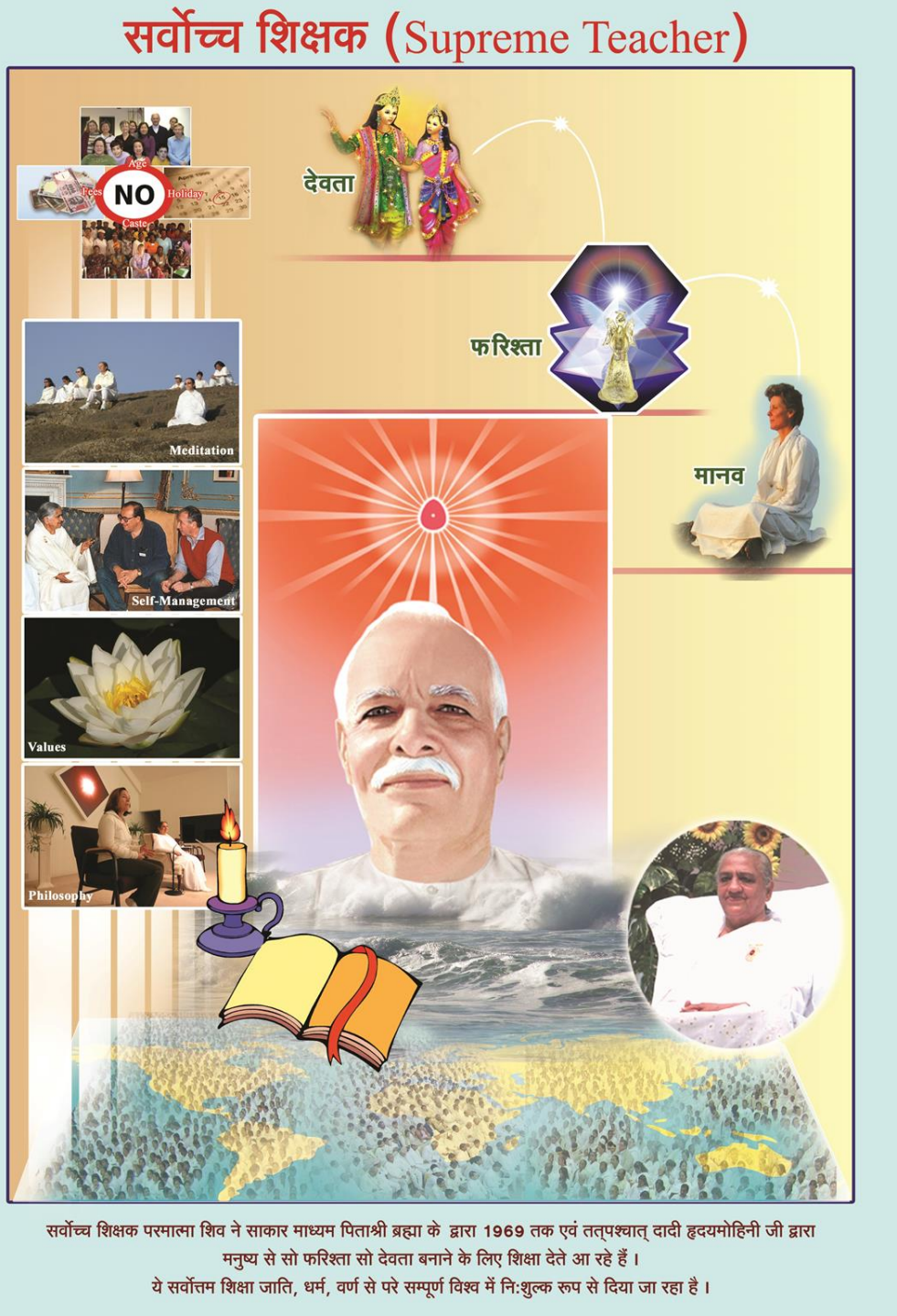

✓तुम्हें सभी मनुष्यों को ज्ञान की भू- भू कर आपसमान ज्ञानवान बनाना है । जिससे परिस्तानी निर्विकारी देवता बन जायें । ऊंच ते ऊंच पढ़ाई है मनुष्य से देवता बनाना । गायन भी है ना मनुष्य को देवता किये. किसने किया? देवताओं ने नहीं किया । भगवान् ही मनुष्यों को देवता बनाते हैं । मनुष्य इन बातों को जानते नहीं ।

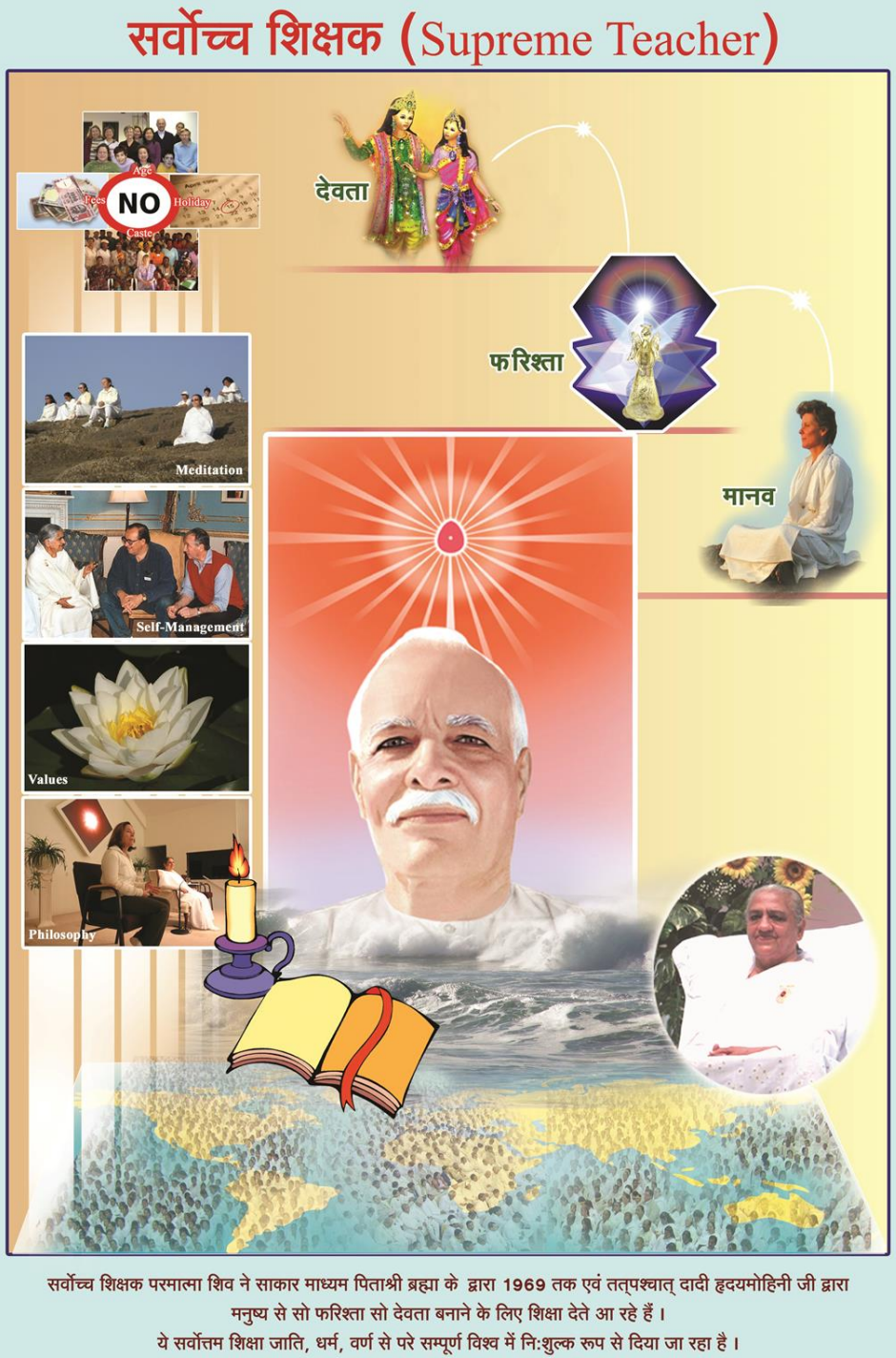

✓अब तुम बच्चे सारे विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हो ।

✓खूब पुरूषार्थ कर अपनी जाँच करनी है-कहाँ हमारी आँखें धोखा तो नहीं देती हैं? विश्व का मालिक बनना बड़ी ऊँच मंजिल है । चढ़े तो चाखे..... अर्थात् राजाओं का राजा बनते, गिरे तो प्रजा में चले जायेंगे । आजकल तो कहेंगे विकारी जमाना है । भल कितने बड़े आदमी हैं, समझो क्वीन है उनके अन्दर भी डर रहता होगा कि कहाँ कोई हमें उड़ा न दे ।

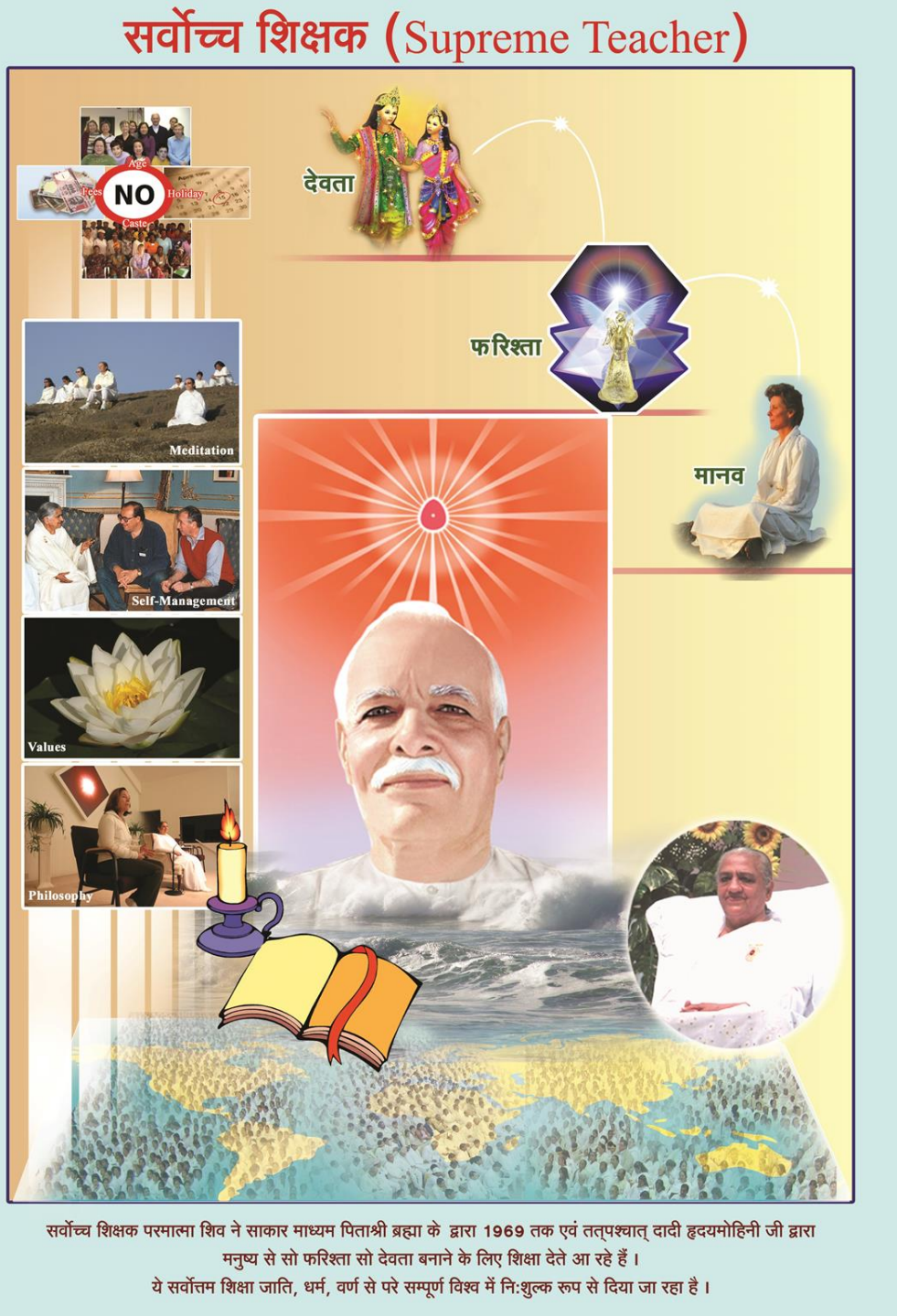

✓बस, यह पुराना शरीर छोड़कर हमको जाना है फिर जब शरीर लेंगे तो स्वर्ग में अपना पार्ट बजायेंगे ।

✓बाकी आत्मा की बुद्धि ऐसी वर्थ नाट ए पेनी हो जाती है । अब बाप कितना बुद्धिवान बनाते हैं ।

✓जो सुखधाम में था वह फिर होगा । वहाँ कोई रोग-दुख की बात नहीं । यहाँ तो अपरम्पार दुःख है । वहाँ अपरम्पार सुख हैं । अभी हम यह स्थापन कर रहे हैं

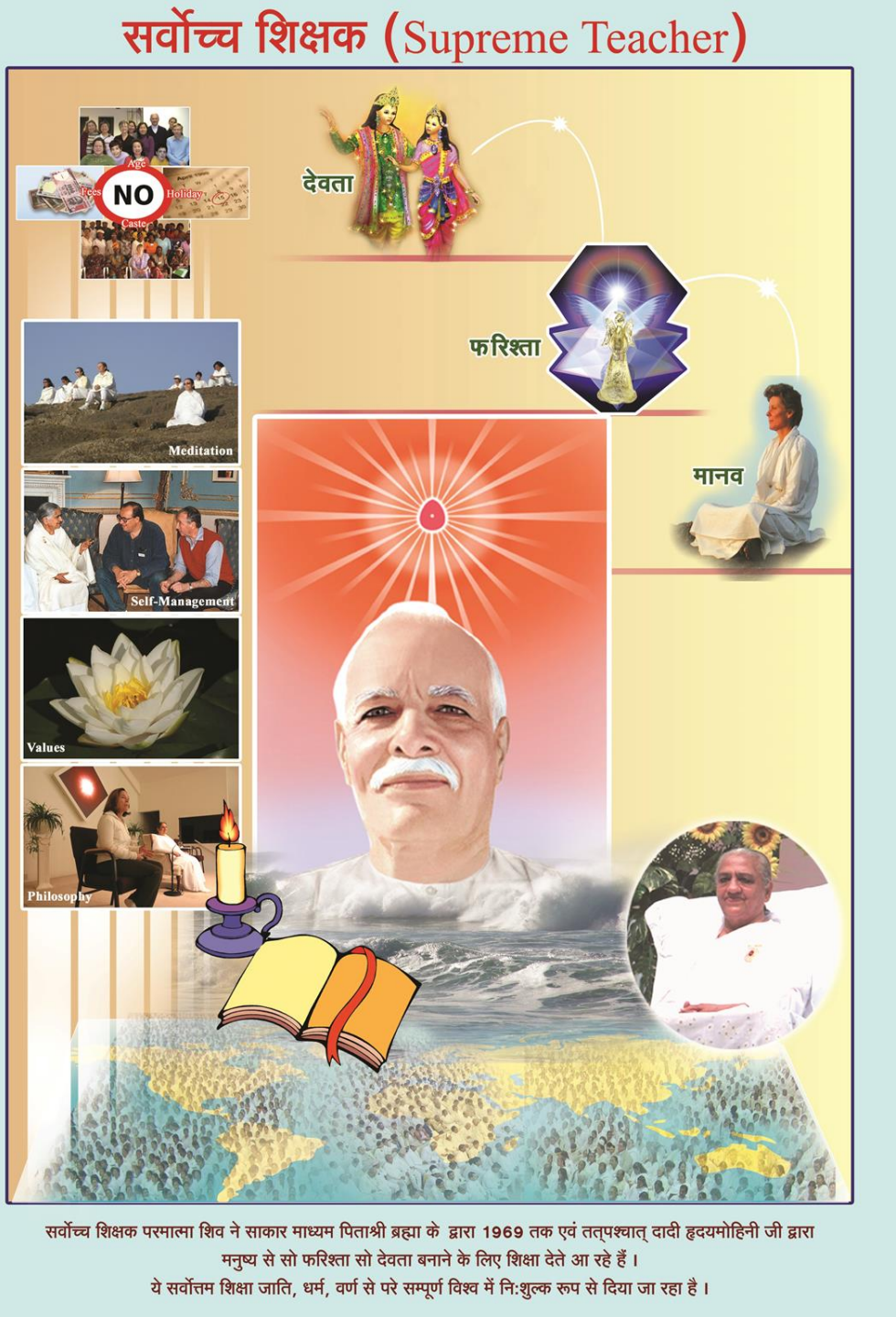

✓तुम बाप की याद में विषय सागर से क्षीरसागर में चले जाते हो ।

✓अभी है संगमयुग । बाप भी संगम पर ही आते हैं । अभी तुम जानते हो 5 हजार वर्ष में हम क्या-क्या जन्म लेते हैं । कैसे सुख से फिर दु :ख में आते हैं । जिनको सारा ज्ञान बुद्धि में है, धारणा है वह समझ सकते हैं । बाप तुम बच्चों की झोली भरते हैं ।

✓वरदान: विशेषता के संस्कारों को नेचुरल नेचर बनाए साधारणता को समाप्त करने वाले मरजीवा भव !

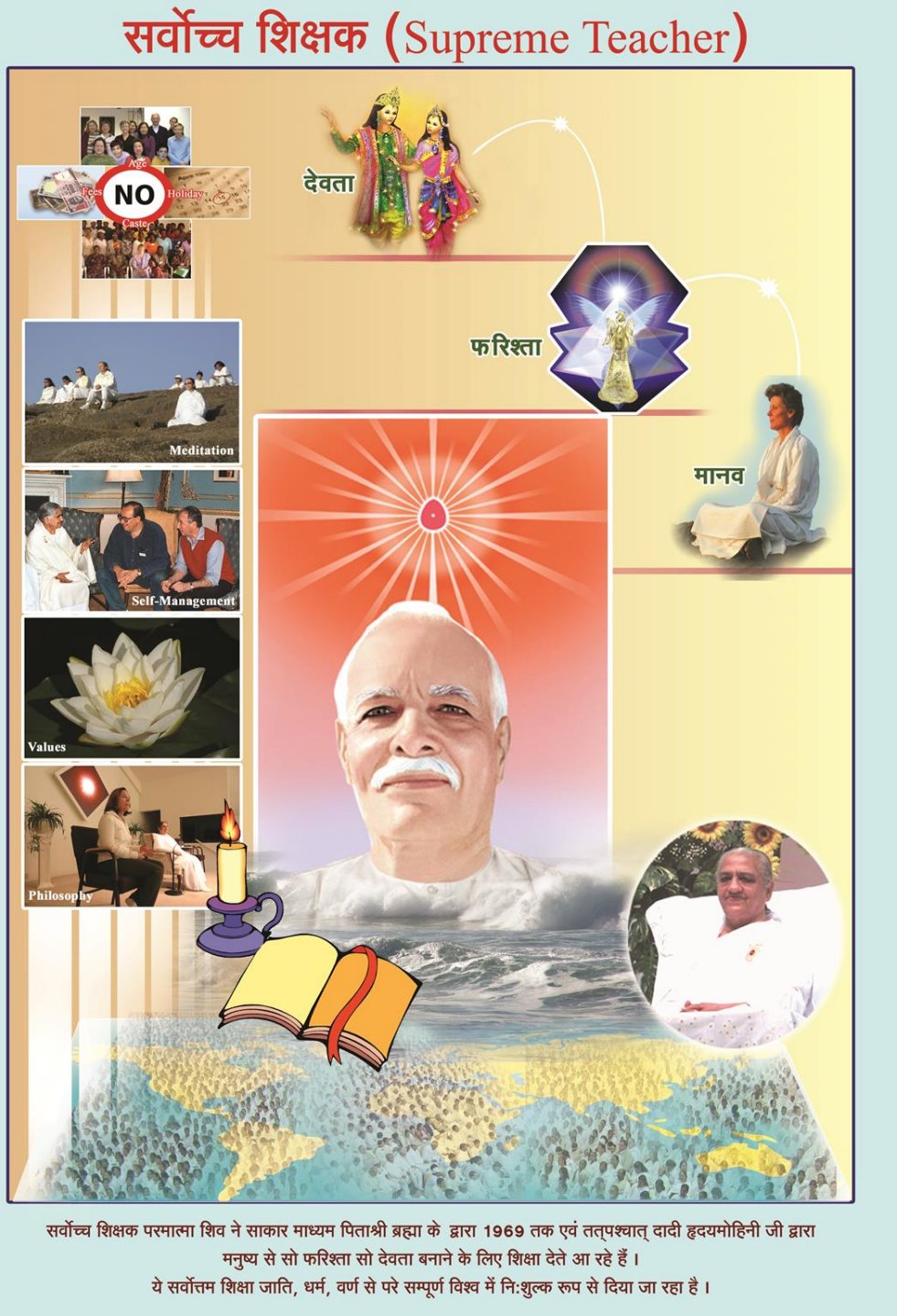

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों को नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार बापदादा व मात-पिता का दिल व जान, सिक व प्रेम से याद-प्यार और गुडमार्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।